Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामान्य हिन्दी व्याकरण एवं अभ्यासिका

भाग - 1

सामान्य हिन्दी व्याकरण

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्णमाला	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	विशेषण	9
5	क्रिया	12
6	क्रिया विशेषण	15
7	परसर्ग	17
8	लिंग	19
9	वचन	24
10	काल	27
11	कारक	31
12	अव्यय एवं अविकारी शब्द	34
13	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	38
14	वाक्य रचना	43
15	वर्तनी शुद्धि	47
16	विराम चिन्ह	52
17	वाक्य शुद्धि	55
18	वाच्य	59
19	संधि	61
20	समास	73
21	उपसर्ग	83
22	प्रत्यय	87
23	तत्सम व तद्भव शब्द	92

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	देशज एवं विदेशज शब्द	97
25	रस	101
26	छंद	108
27	अलंकार	112
28	शब्द युग्म	116
29	विलोम शब्द	124
30	पर्यायवाची शब्द	130
31	वाक्य के एक शब्द	135
32	अनेकार्थी शब्द	143
33	समश्रुत भिन्नार्थक	147
34	मुहावरे	152
35	लोकोक्तियाँ	160
36	पारिभाषिक शब्दावली	167

1
CHAPTER

वर्णमाला

- किसी भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसे छोटे भागों में और न तोड़ा जा सकता हों, ध्वनि कहलाती है, ध्वनि को वर्ण कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला** कहा जाता है।
- हिंदी वर्णमाला में मूलत: कुल 44 वर्ण होते हैं जिन्हें 2 भागों में विभक्त गया है।

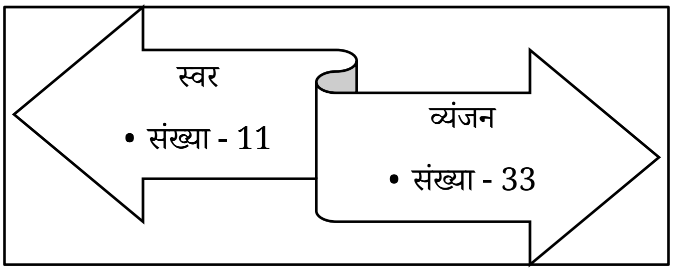

क्या आप जानते हैं?
वर्णों को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। वर्णों की संख्या कहीं 52 तो कहीं 44 मानी गयी है। सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अत: वहाँ कुल वर्णों की संख्या 53-3 = 49 ही मानी गयी है।
सर्वमान्य मत - 44 वर्ण हैं। (11 स्वर तथा 33 व्यंजन)

वर्णों का वर्गीकरण

- **श्वास वायु के आधार पर**
  - **(i) अनुनासिक** – अनुनासिक वर्णों की ध्वनि में श्वास वायु मुख के साथ नाक से बाहर निकलती है। अनुनासिक वर्णों में चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अँ, इँ, प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण।
  - **(ii) अल्प प्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय वायु का कम प्रवाह होता है, अल्प प्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का 1, 3 व 5 वाँ वर्ण।
  - **(iii) महाप्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु का प्रवाह होता है, महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण।
- **स्वर तत्रों की स्थिति व कम्पन्न के आधार पर**
  - **(i) घोष/सघोष :-** घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद या गूंज। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर तंत्र में कंपन (गूंज उत्पन्न होना) होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।
    घोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण घोष वर्ण कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस है।
  - **(ii) अघोष :-** जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज उत्पन्न नहीं होती वे वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।
    अघोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण अघोष वर्ण होते हैं, इनकी संख्या तेरह है।

स्वर

- ऐसी ध्वनियाँ अथवा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं।
- स्वर स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। **स्वर 11 होते हैं** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

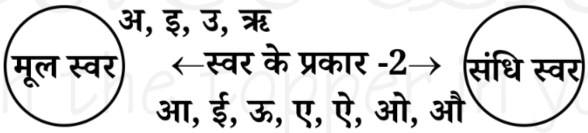

- **इन्हें मूलत: 3 भागों में बांटा जा सकता है।**
  - **(i) ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। जैसे - अ, इ, उ।
  - **(ii) दीर्घ स्वर -** जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। जैसे – आ, ई, ऊ।
  - **(iii) प्लुत स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ सवा से भी अधिक समय लगता है वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

➢ **जिह्वा के आधार पर स्वर**

(i) **अग्र स्वर** –स्वर जिसमे जीभ का अग्र भाग प्रयोग में आता हैं । - इ, ई, ए, ऐ

(ii) **मध्य स्वर** – जिसमे जीभ का मध्य भाग प्रयोग में आता हैं। - अ

(iii) **पश्चस्वर** – जिसमे जीभ का पश्च भाग प्रयोग में आता हैं । - आ, उ, ऊ, ओ, औ

वर्ण	**उच्चारण स्थान**
अ, आ	कंठ
इ, ई	तालु
ऋ	मूर्धा
उ, ऊ	ओष्ठ
ए, ऐ	कंठ + तालव्य
ओ, औ	कंठ + ओष्ठ

महत्वपूर्ण तथ्य –

➢ प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्ठाध्यायी रचना में मिलता है।

➢ दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है

➢ सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है

समानाक्षर स्वर

✓ आ – अ + अ

✓ ई – इ + इ

✓ ऊ – उ + उ

संधि स्वर

✓ ए – अ + इ

✓ ऐ – अ + ए

✓ औ – अ + ओ

➢ अंग्रेज़ी से गृहित स्वर – ऑ (डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

➢ स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को ही व्यंजन कहा जाता है।

➢ जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।

➢ व्यंजन अस्वतंत्र एवं अपूर्ण होते हैं।

➢ व्यंजन को **मूलतः 3 भागों** में बांटा जा सकता है।

व्यंजन के मूलत: तीन प्रकार हैं

- **स्पर्श - संख्या : 25**
- **अंत:स्थ - संख्या : 4**
- **ऊष्म - संख्या : 4**

Toppersnotes Unleash the topper in you

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को आठ भागों में बांटा गया है है:

1. **स्पर्शी** : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में फेफड़ों सद्वारा छोड़ी गयी वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करके बाहर निकलती है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे – क् ख् ग् घ्, ट्, ठ ड ढ़, त्, थ् ध, प् फ् ब् भ्
2. **संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण/संघर्ष करती हुई बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - श, ष्, स्, ह, ख्, ज, फ्
3. **स्पर्श संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च्, छ, ज्, झ्।
4. **नासिक्य :** जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है। जैसे - ङ्, ञ, ण, न, म्।
5. **पार्श्विक :** जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं - जैसे - 'ल्'।

6. **प्रकम्पित :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा दो-तीन बार कंपन करती है, वे प्रकंपित व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- 'र'

7. **उत्क्षिप्त :** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से ऊपर उठकर नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त ध्वनि कहलाती है। जैसे - ड़, ढ़

8. **संघर्ष हीन :** जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

वर्ग	**स्पर्श वर्ण**					**उच्चारण स्थान**
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
प्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष	घोष

व्यंजन प्रकार	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**
अंत:स्थ व्यंजन	य	तालु
	र	दंत
	ल	दंत
	व	दंत + ओष्ठ
ऊष्म व्यंजन	श	तालु
	ष	मूर्धा
	स	दंत
	ह	कंठ

संयुक्त व्यंजन

➢ हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन होते हैं। ये दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं।

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

अयोगवाह

➢ वे वर्ण जो न तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है उन्हें अयोगवाह (अं अः) कहा जाता है।

➢ अं को अनुस्वार (नाक), अँ को अनुनासिक (नाक मुख) और अः को विसर्ग (कंठ) कहा जाता है ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

क्र. सं.	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**	**उच्चारण ध्वनि**
1	क वर्ग, अ, आ और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2	च वर्ग, इ, ई, य, श	तालु	तालव्य
3	ट वर्ग, ऋ, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4	त वर्ग, लृ, ल, स	दन्त	दन्त्य
5	प वर्ग, उ, ऊ,	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6	अ, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7	ए ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

महत्वपूर्ण तथ्य –

➢ हिंदी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है जिन्हें आगत / गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है

  क़ – क़रीब

  ख़ – ख़राब

  ग़ – ग़म

  ज़ – ज़रा

  फ़ – फ़न (अंग्रेज़ी)

- नुक्ता / आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फ़ारसी, अंग्रेज़ी भाषा से हुआ है।
- नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिंदी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिन्द" को जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

- हिंदी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अ: (विसर्ग) ध्वनियाँ हैं को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वर में जोड़ा जाता है न ही व्यंजन में
- अनुस्वार (अं) व विसर्ग (अ:) को अयोगवाह नाम देने का श्रेय किशोरी दास वाजपेयी को जाता है
- तालु उच्चारण स्थान पर आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है
- वर्त्स वर्णों में न, ल, स को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या 4 होती है
  1. जिह्वा
  2. अधरोष्ठ (नीचे का होठ)
  3. स्वर तंत्रियाँ
  4. कोमल तालु

- काकल वर्ण के अंतर्गत विसर्ग (:) को शामिल किया गया है
- **रकार / रेफ या र सम्बंधित नियम**

  (i) नियम 1: यदि र के बाद व्यंजन आए तो र को उसी व्यंजन वर्ण के के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजनवर्ण के ऊपर लिखा जाता है

  जैसे – कर्म, धर्म, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि

  (ii) नियम 2: यदि र से पहले व्यंजन वर्ण आये तो र को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है

  जैसे – प्रकाश, भ्रष्ट, प्रभात, प्रेम, क्रम आदि

- **उत्क्षिप्त वर्ण का नियम**

  ✓ **नियम 1 :** यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

  जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया आदि

  ✓ **नियम 2:** यदि शब्द के अंतर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

  जैसे – पण्डित, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल आदि

  नोट – उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आती है जैसे – लड़ाई, सड़क,पकड़ना, पढ़ाई आदि

Unleash the topper in you

2 CHAPTER संज्ञा

- वे विकारी शब्द जो किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव, अवस्था, गुण या दशा के नाम का बोध करते हों संज्ञा कहलाते हैं।
- संज्ञा शब्द दो शब्दों **सम् + ज्ञा** से मिलकर बना है अर्थात् वह प्रत्येक वस्तु (सजीव या निर्जीव) जिसका कोई नाम है वह संज्ञा है।

संज्ञा के प्रकार

- संज्ञा के मूलत: 3 भेद /प्रकार हैं। जो व्युत्पत्ति के आधार पर हैं। परन्तु दो अन्य भेद अर्थ के आधार पर भी माने गए है।

व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के प्रकार

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम का बोध हो, उन्हें'**व्यक्तिवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

   उदाहरण : अभिषेक, जयपुर, रमा, रहीम , अरावली ,समुद्रगुप्त, गंगा, कामायनी, सुशील आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की सम्पूर्ण जाति, वर्ग अथवा समुदाय का बोध हो, उन्हें'**जातिवाचक संज्ञा'** कहते हैं। इसमे मुख्यत: समूहवाचक शब्द आते हैं ।

   उदाहरण : पुरुष, शहर, पशु, मुनष्य, सेना, पर्वत, सभा, गाय, डॉक्टर , नगर , बालक, लडकी, आदमी, दोस्त, पुस्तक , पहाड़ , लड़का, जुलाहा, मंत्री, बहन, लेखक आदि।

3. **भाववाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों सें प्राणियों और वस्तुओं के गुण-दोष, धर्म, अवस्था, भाव और व्यापार आदि का बोध हो, उन्हें **'भाववाचक संज्ञा'** कहते है।

   उदाहरण : अच्छाई, मिठास, गर्मी, बुढ़ापा, सुन्दरता, नारीत्व, चतुरता, बचपन, दाम, क्रोध, गर्व, दौड़, अनुशासन इत्यादि ।

भाववाचक संज्ञा का निर्माण

- भाववाचक संज्ञा का निर्माण 5 प्रकार से किया जा सकता है।

1. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

(i) **'ता' प्रत्यय:** मानव-मानवता, मित्र-मित्रता, प्रभु-प्रभुता, पशु-पशुता।

(ii) **त्व प्रत्यय :** पशु-पशुत्व, मनुष्य-मनुष्यत्व, कवि-कवित्व, गुरु-गुरुत्व।

(iii) **पन :** लड़का-लड़कपन, बच्चा-बचपन ।

(iv) **अ :** शिशु-शैशव, गुरु-गौरव, विभु-वैभव।

(v) **इ :** भक्त-भक्ति ।

(vi) **ई :** नौकर-नौकरी, चोर-चोरी।

(vii) **आपा :** बूढ़ा-बुढ़ापा, बहन-बहनापा।

2. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा :

(i) **त्व : अपना -** अपनत्व, निज निजत्व, स्व-स्वत्व ।

(ii) **पन : अपना -** अपनापन, पराया-परायापन ।

(iii) **कार : अहं** - अहंकार।

(iv) **स्व: सर्व** - सर्वस्व ।

3. विशेषण से भाववाचक संज्ञा :

(i) **आई :** साफ-सफाई, अच्छा अच्छाई, बुरा-बुराई।

(ii) **आस :** खट्टा-खटास, मीठा-मिठास ।

(iii) **ता :** उदार-उदारता, वीर वीरता, सरल-सरलता ।

(iv) **य :** मधुर -माधुर्य, सुन्दर-सौन्दर्य, स्वस्थ-स्वास्थ्

(v) **पन :** खट्टा- खट्टापन, पीला-पीलापन।

(vi) **त्व :** वीर -वीरत्व।

(vii) **ई :** लाल लाली।

4. क्रिया से भाव-वाचक संज्ञा :

(i) **अ**: खेलना-खेल, लूटना लूट, जीतना-जीत।

(ii) **ई:** हँसना-हँसी।

(iii) **आई:** चढ़ना चढ़ाई, पढ़ना-पढ़ाई, लिखना-लिखाई।

(iv) **आवट:** आवट-बनाना-बनावट, थकना-थकावट, लिखना-लिखावट।

(v) **आव :** चुनना-चुनाव।

(vi) **आहट:** घबराना-घबराहट, गुनगुनाना-गुनगुनाहट ।

(vii) **उडना :** उड़ान।

(viii) **न** : लेना-देना लेन-देन, खाना-खान।

5. अव्यय से भाववाचक संज्ञा

(i) **ई :** भीतर-भीतरी, ऊपर, ऊपरी दूर-दूरी।

(ii) **य :** समीप सामीप्य ।

(iii) **इक :** परस्पर -पारस्परिक, व्यवहार - व्यावहारिक ।

(iv) **ता :** निकट निकटता, शीघ्र शीघ्रता।

अर्थ के आधार पर संज्ञा के प्रकार

1. **समूहवाचक संज्ञा :** जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे – सभा, परिवार, कक्षा, दल, गिरोह, संघ, गुच्छा, पुंज, ढेर।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा:** जिन संज्ञा शब्दों से किसी ऐसे पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है जिसे हम नाप – तौल सकते हैं लेकिन गिन नहीं सकते उन्हें द्रव्य वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, पानी, पेट्रोल, सोना, लोहा, कोयला, लकड़ी, कागज, चीनी, आटा, घास।

क्या आप जानते हैं?

- जब कभी द्रव्यमान संज्ञा शब्द बहुवचन के रूप में द्रव्य के प्रकारों का बोध कराता है।, तब वह जातिवाचक संज्ञा बन जाता है। जैसे - यह फर्नीचर कई प्रकार के लकड़ियों से बना है।
- जब समूहवाचक संज्ञा बहुत सी समूह ईकाइयों को प्रकट करता है, तब बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे दोनों सेनाएँ आपस में जमकर लड़ी।
- जब कभी भाववाचक संज्ञा शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते है, तब वे जातिवाचक संज्ञा बन जाते है। जैसे बुराईयों से बचकर रहो।
- कुछ भाववाचक शब्द मूल शब्द है। जैसे प्रेम, घृणा, क्रोध आदि।
- अधिकांश भाववाचक शब्द यौगिक होते है -गरीब-गरीबी। लड़का-लड़कपन
- भावचावक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय और क्रिया शब्दों के अंत में त्व, ता, वन, पा, आस, आई, वट, हट इत्यादि प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। जैसे मित्र-मित्रता, अपना-अपनत्व, लम्बा-लम्बाई आदि।

Unleash the topper in you

3 CHAPTER सर्वनाम

- संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
- भाषा में सौन्दर्य, संक्षिप्तता, सरलता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने व दूर करने के लिए संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है 'सब का नाम'। इससे वाक्य सहज एवं सरल हो जाता है।

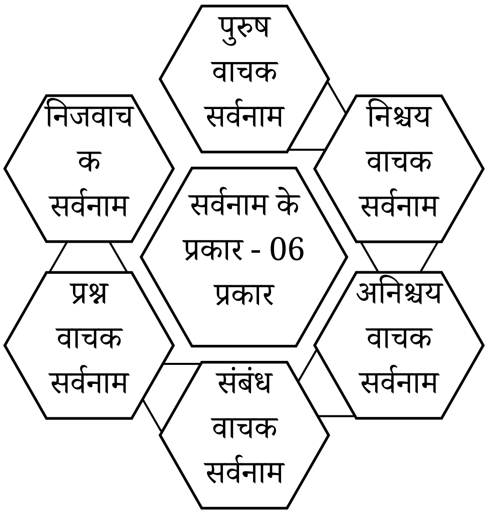

1. पुरुष वाचक सर्वनाम – जिन शब्दों का प्रयोग कहने वाले (वक्ता), सुनने वाले (श्रोता) व अन्य जिसके विषय में कहा जाए के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं :

पुरुष वाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला व्यक्ति स्वयं के लिए करता है।	वे सर्वनाम शब्द जो श्रोता को संबोधित करने में प्रयोग किये जाए ये सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।	बोलने व सुनने वाले व्यक्ति के द्वारा किसी अन्य के बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।
मैं, हम, मुझे, मेरा, हमारा, हमें आदि।	तू, तुम, तुझे तुम्हें तेरा, आप, आपका, आपको आदि।	वह, वे, उन्हें, उसे, इसे, उसका इसका आदि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम निकटस्थ अथवा दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चित संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

✓ इसके मुख्य दो प्रयोग हैं :

I. **निकट की वस्तुओं के लिए -** यह, ये।

II. **दूर की वस्तुओं के लिए** - वह, वे।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम से किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध होता हो जिसके विषय में निश्चित सूचना नहीं मिलती तथा अनिश्चितता की स्थिति बनी रहती है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे - कुछ, कोई।

✓ **'कोई'** सर्वनाम का प्रयोग प्रायः प्राणी वाचक सर्वनाम के लिए होता है, जैसे - कोई उसे बुला रहा है।

✓ **'कुछ'** सर्वनाम का प्रयोग वस्तु के लिए होता है, जैसे - पानी में कुछ है, घी में कुछ मिला है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उप वाक्यों के बीच में प्रयुक्त होकर एक उप वाक्य की संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उप वाक्य के साथ दर्शाने वाला सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है, अर्थात् दो पृथक – पृथक बातों के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करने वाले शब्दों को संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है जैसे - जो, जिसे, जिसका, जिसको।

उदाहरणार्थ – जो सोएगा, सो खोएगा।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो सत्य बोलता है, वह नहीं डरता।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- क्या, किससे, कौन।

उदाहरणार्थ – वहाँ दरवाजे पर कौन खड़ा है?
कल तुम किससे बात कर रहे थे?
आज तुम्हें क्या चाहिए?

6. **निज वाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, निज वाचक कहलाते हैं।

जैसे - आप, अपना, स्वयं, खुद आदि।

उदाहरणार्थ – मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ।
आप अपने घर कब जा रहे हैं?
मैं अपना खाना बना रहा हूँ।

सर्वनाम शब्दों के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश

- सर्वनामों का रूप परिवर्तन पुरुष, वचन तथा कारक के अनुसार ही होता है, लिंग भेद के आधार पर नहीं।
- उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष बहुवचन रूप वाले सर्वनाम एक व्यक्ति के लिए भी प्रयोग किए जाते हैं, जैसे - मैं आऊँगा अर्थात् हम आएंगे। तू जाएगा अर्थात् तुम जाओगे।
- अन्य पुरुष वाचक बहुवचन रूप का आदर सूचक होने के कारण एक व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे - गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। वे कई साल दिल्ली में रहे। या आप कई साल दिल्ली में रहे।
- संज्ञा में विभक्ति उसके साथ नहीं जुड़ती, जबकि सर्वनामों में विभक्तियाँ उन्हीं के साथ जुड़ी रहती हैं, जैसे - उसने, उसको, जिसका, इत्यादि । जैसे –
  - ✓ संज्ञा - राधा ने
  - ✓ सर्वनाम - उसने
- अभिमान व्यक्त करने या अधिकार व्यक्त करने के लिए भी 'मैं' के स्थान पर 'हम' अथवा 'हमारा' का प्रयोग किया जाता है, जैसे-
  - ✓ 'हम' कभी भी किसी से हारे नहीं। (अभिमान)
  - ✓ हमारा यह काम तुम्हें जरूर करना है। (अधिकार)
- अनिश्चय वाचक सर्वनाम 'कुछ' (एकवचन) संख्या एवं परिणाम दोनों का बोध कराते हैं, जैसे-
  - ✓ आपके यहाँ लहसुन होता है, कुछ हमारे यहाँ भी भेज दिया कीजिए। (परिणाम वाचक)
  - ✓ आपके घर इतने अतिथि आए हैं, कुछ को हमारे यहाँ भेज दीजिए। (संख्यावाचक)
- प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कौन' का प्रयोग मनुष्यों तथा क्या का प्रयोग कीट-पतंगों, पशुओं और जड़ पदार्थों के लिए होता है, जैसे - अन्दर कौन बैठा है? इस डिब्बे में क्या है?
- **'कुछ'** और **'कोई'** का बहुवचन रूप कुछ और किन्हीं होता है। निर्जीव वस्तुओं और कीड़े-मकोड़ों के लिए **'कुछ'** का प्रयोग होता है। सजीव वस्तुओं के लिए **'कोई'** और **'किन्हीं'** शब्दों का प्रयोग होता है।
- प्रायः सभी सर्वनाम रूपों के साथ 'ही' अव्यय जोड़ा जा सकता है।

सर्वनाम पदबंध

- जो पदबंध वाक्य में सर्वनाम पदों का कार्य करते है,उन्हे सर्वनाम पदबंध कहते है।

  जैसे -
  - ✓ **चोट खाए तुम** भला क्या खेलेगो।
  - ✓ **मेरे रिश्तेदार में से** कोई समय पर नहीं पहुँचा।

4 CHAPTER विशेषण

- वे शब्द, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें **विशेषण** कहते हैं।
- अत: विशेषता बताने वाले शब्दों को **'विशेषण'** कहा जाता है तथा विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है उसे **'विशेष्य'** कहते हैं।

विशेषण के कार्य

विशेषण के निम्नलिखित प्रमुख कार्य है -

- **विशेषण, संज्ञा और सर्वनाम के गुण-दोष को बतलाता है। जैसे -**
  - ✓ राधा पढ़ने में तेज है। (गुण का बोध)
  - ✓ लेकिन, वह डरपोक है। (दोष का बोध)
- **यह संज्ञा और सर्वनाम की निश्चित संख्या या परिमाण बतलाता है। जैसे -**
  - ✓ दो लड़कें आये थे। (निश्चित संख्या का बोध)
  - ✓ दो लिटर दूध दो। (निश्चित परिमाण का बोध)
- **यह संज्ञा और सर्वनाम की अनिश्चित संख्या या परिमाण बतलाता है। जैसे -**
  - ✓ कुछ लड़कियाँ आयी हैं। (अनिश्चित संख्या का बोध)
  - ✓ अधिक भोजन मत करो। (अनिश्चित परिमाण का बोध)
- **यह संज्ञा और सर्वनाम के क्षेत्र को सीमित करता है। जैसे -**
  - ✓ लाल रूमाल लाओ। (सिर्फ लाल - काला, पीला नहीं)
  - ✓ उस कुत्ते को खिलाओ। (किसी खास कुत्ते को, दूसरे को नहीं)
- **यह संज्ञा और सर्वनाम की दशा, अवस्था आदि बतलाता है। जैसे-**
  - ✓ तुम बीमार हो। (दशा का बोध)
  - ✓ मैं जवान हूँ। (अवस्था का बोध)

विशेषण के प्रकार

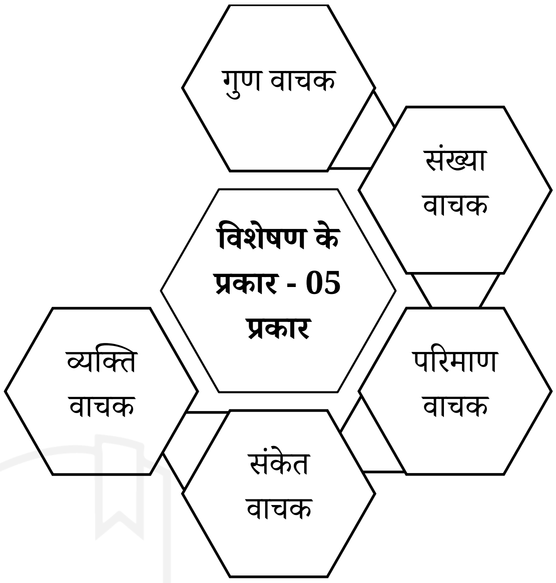

नोट : विशेषण के प्रकारों में विद्वानों में मतभेद रहता हैं, कुछ जगह विशेषण के पाँच प्रकार बताएँ गए हैं और कुछ जगह पर 04 प्रकार बताएँ गए हैं । **एनसीईआरटी के** आधार पर विशेषण के 04 प्रकार होते हैं – गुणवाचक, संख्यावाचक, परिणामवाचक, सर्वनामिक विशेषण । **राजस्थान शिक्षा बोर्ड** की पुस्तकों में विशेषण के 05 प्रकार बताएं गए हैं ।

1. **गुणवाचक विशेषण :** किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव, दशा आदि का बोध कराने वाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

   जैसे- काला, पुराना, भला, छोटा, मीठा, देशी, पापी, धार्मिक आदि।

2. **संख्यावाचक विशेषण** : किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित, अनिश्चित संख्या, क्रम या गणना का बोध कराने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

संख्या वाचक विशेषण

निश्चित संख्या वाचक विशेषण

जिस विशेषण शब्द से निश्चित संख्या का बोध होता है, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाता है।

गणनावाचक	क्रमवाचक	आवृत्तिवाचक	समुदाय वाचक
एक, दो, तीन	पहला, दूसरा	दुगुना, चौगुना	दोनों, तीनों, चारों

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

जिस विशेषण शब्द से अनिश्चित संख्या का बोध हो, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाता है।

कई, सब, कुछ, अनेक आदि।

3. **परिमाण वाचक विशेषण** : वे विशेषण, जो किसी पदार्थ की निश्चित या अनिश्चित मात्रा, परिमाण, नाप या तौल आदि का बोध कराते है, उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।
   ✓ **इसके दो उपभेद किए जा होते हैं**
   - **निश्चित परिमाण वाचक** – दो मीटर, पाँच किलो, सात लीटर।
   - **अनिश्चित परिमाण वाचक** – थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा, अधिक, जरा-सा, सब आदि।
4. **संकेतवाचक विशेषण** : वे शब्द जो सर्वनाम हैं किन्तु विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
   जैसे
   (i) इस गेंद को मत फेंको।
   (ii) उस पुस्तक को पढ़ो।
   (iii) वह कौन गा रही है?
   वाक्यों में 'इस', उस, वह आदि शब्द संकेतवाचक विशेषण हैं।
5. **व्यक्तिवाचक विशेषण :** वे शब्द, जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनकर अन्य संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।
   जैसे – जोधपुरी जूती, बनारसी साड़ी, कश्मीरी सेब, बीकानेरी भुजिए। वाक्यों में जोधपुरी, बनारसी, कश्मीरी, बीकानेरी शब्द व्यक्तिवाचक विशेषण है।

विशेष : कतिपय विद्वान् एक और प्रकार – 'विभाग वाचक विशेषण' का भी उल्लेख करते हैं। जैसे- प्रत्येक हर एक आदि।

प्रविशेषण

- ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं ।
- प्रविशेषण सामान्यतः विशेषण के गुणों में वृद्धि लाता है।
  जैसे : थोड़ा, बहुत, अति, अत्यंत, अधिक, अत्यधिक, बड़ा, बेहद, महा, घोर, ठीक, बिल्कुल, लगभग आदि।

दूध मीठा है।	मीठा - संज्ञा की विशेषता = विशेषण
दूध थोड़ा मीठा है	थोड़ा - विशेषण की विशेषता = प्रविशेषण
वह पाँच बजे आएगा।	पाँच - संज्ञा की विशेषता = विशेषण
वह ठीक पाँच बजे आएगा।	ठीक - विशेषण की विशेषता = प्रविशेषण
स्पष्ट है कि उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'थोड़ा' एवं 'ठीक' शब्द प्रविशेषण हैं, क्योंकि ये विशेषण की विशेषता बतलाते हैं।	

विशेषण की रचना

- कुछ शब्द मूल रूप में विशेषण ही होते हैं किंतु कुछ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं, जैसे-

संज्ञा से विशेषण	**संज्ञा + प्रत्यय = विशेषण**	रंग + ईन = रंगीन राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय
सर्वनाम से विशेषण	**सर्वनाम + प्रत्यय = विशेषण**	मैं + एरा = मेरा तुम + हारा = तुम्हारा
क्रिया से विशेषण	**क्रिया + प्रत्यय = विशेषण**	वंदन + ईय = वंदनीय लूट + एरा = लुटेरा
अव्यय से विशेषण	**अव्यय + प्रत्यय = विशेषण**	बाहर + ई = बाहरी पीछे + ला = पिछला

विशेषण की अवस्थाएँ

- विशेषण की तुलनात्मक स्थिति को अवस्था कहते हैं। अवस्था के तीन प्रकार माने गये हैं-
  1. **मूलावस्था** – वह अवस्था जिसमें किसी संज्ञा या सर्वनाम की सामान्य स्थिति का बोध होता है।
     जैसे- रहीम अच्छा लडका है।
  2. **उत्तरावस्था** – वह अवस्था जिसमें दो संज्ञा या सर्वनाम की तुलना की जाती है।
     जैसे- अशोक रहीम से अच्छा है। या प्रशान्त अभिषेक से श्रेष्ठतर है।
  3. **उत्तमावस्था** – जिसमें दो से अधिक संज्ञा या सर्वनामों की तुलना करके, एक को सबसे अच्छा या बुरा बतलाया जाता है वहाँ उत्तमावस्था होती है।
     जैसे - अकबर सबसे अच्छा है। रजिया कक्षामें श्रेष्ठत्तम छात्रा है।

अवस्था परिवर्तन:

- मूलावस्था के शब्दों में 'तर' तथा तम प्रत्यय लगा कर या शब्द के पूर्व से अधिक, या सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग कर क्रमश: उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था में प्रयुक्त किया जाता है, जैसे –

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
अच्छा	से अच्छा	सबसे अच्छा
ऊँचा	से अधिक ऊँचा	सबसे ऊँचा

विशेष्य - विशेषण और विधेय-विशेषण

- प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के दो भेद है
  1. विशेष्य-विशेषण और
  2. विधेय-विशेषण
- **विशेष्य (संज्ञा/सर्वनाम)** के पहले आए विशेषण को **विशेष्य-विशेषण** तथा विशेष्य के बाद आए विशेषण को **विधेय-विशेषण** कहते हैं। जैसे-
  - ✓ वह लम्बा लड़का है। (लम्बा विशेष्य-विशेषण)
  - ✓ वह लड़का लम्बा है। (लम्बा विधेय-विशेषण)

  नोट - यहाँ दो बातें ध्यान देने योग्य हैं

1. **विशेषण के लिंग एवं वचन विशेष्य के लिंग एवं वचन के अनुसार होते हैं, चाहे विशेषण विशेष्य के पहले आए या बाद में। जैसे -**
   - ✓ वह अच्छा लड़का है। (अच्छा, लड़का - दोनों एकवचन, पुलिंग)
   - ✓ वह लड़का अच्छा है। (लड़का, अच्छा - दोनों एकवचन, पुलिंग)
   - ✓ वह अच्छी लड़की है। (अच्छी, लड़की - दोनों एकवचन, स्त्रीलिंग)
   - ✓ वे अच्छे लड़के हैं। (अच्छे, लड़के - दोनों बहुवचन, पुलिंग)

   स्पष्ट है कि विशेषण के लिंग एवं वचन, विशेष्य के लिंग एवं वचन के अनुसार आये हैं।
2. **अगर एक ही विशेषण के अनेक विशेष्य हों, तो विशेषण के लिंग और वचन प्रथम विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार होंगे। जैसे -**
   - ✓ उजला कुरता, टोपी और जूते लाओ। (प्रथम विशेष्य कुरता - पुंलिंग, अतः - उजला)
   - ✓ उजली टोपी, कुरता और जूते लाओ। (प्रथम विशेष्य टोपी - स्त्रीलिंग, अतः - उजली)
   - ✓ उजले जूते, कुरता और टोपी लाओ। (प्रथम विशेष्य जूते - एकारांत पुंलिंग, अतः - उजले)

   स्पष्ट है कि यहाँ एक विशेषण के अनेक विशेष्य हैं, लेकिन विशेषण के लिंग एवं वचन प्रथम विशेष्य के लिंग एवं वचन के अनुसार ही आये हैं।

सरल वाक्यों में विशेषण के स्थान

- सरल वाक्यों में विशेषण प्रायः संज्ञा के पहले आता है। जैसे -
  - ✓ वह अच्छा लड़का है। (संज्ञा के पहले विशेषण)
  - ✓ वह अच्छी लड़की है। (संज्ञा के पहले विशेषण)
- सार्वनामिक विशेषण भी संज्ञा के पहले आता है। जैसे -
  - ✓ यह फूल देखो। (यह - विशेषण)
  - ✓ वह लड़का आया है (वह - विशेषण)
- सरल वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम के बाद भी विशेषण आता है। जैसे -
  - ✓ सोहन नटखट है। (संज्ञा के बाद विशेषण)
  - ✓ वह बदमाश कहाँ गया ? (सर्वनाम के बाद विशेषण)

5 CHAPTER क्रिया

- वे शब्द या शब्द समूह जिनसे वाक्य में किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।
- संस्कृत में क्रिया रूप को धातु कहते है। बिना क्रिया या धातु के किसी वाक्य की पूर्णता संभव नहीं है।

  जैसे – उठना, चलना, पढना, सोना आदि।

क्रिया के भेद

क्रिया का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जा सकता है जो इस प्रकार है –

कर्म के आधार पर

- क्रिया शब्द का फल किस पर पड़ रहा है, वह किसे प्रभावित कर रहा है आदि आधारों पर किया जाने वाला भेद इसके अंतर्गत आता है।
- इस आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं-

1. सकर्मक क्रिया : जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

- ✓ 'स' का प्रयोग 'सहित' के अर्थ में होता है, इसलिए सकर्मक का अर्थ हुआ - कर्म के साथ।
- ✓ अतः इस क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है।

जैसे –

- ✓ बच्चा चित्र बना रहा है ।
- ✓ गीता सितार बजा रही है।
- ✓ मिठाई देखकर बच्चे ललचाते हैं।
- ✓ बच्चा फल तोड़ रहा है ।

सकर्मक क्रिया

एक कर्मक	**द्विकर्मक क्रिया**
जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं ।	जब वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हुए हों तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
माँ पढ़ रही है।' यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म (पढ़ना) हो रहा है।	अध्यापक जी छात्रों को भूगोल पढ़ा रहे हैं। इस वाक्य में 'पढ़ा रहे हैं' क्रिया के साथ 'छात्रों' एवम् 'भूगोल' दो कर्म प्रयुक्त हुए हैं। अतः 'पढ़ा रहे हैं' द्विकर्मक क्रिया है।
महर्षि वेदव्यास ने जयसंहिता लिखी।	सोहन ने मोहन को थप्पड़ मारा।
लड़का पुस्तक पढ़ता है।	

नोट: सकर्मक क्रिया के दो अन्य भेद इस प्रकार भी है –

1. पूर्ण सकर्मक क्रिया – जब किसी क्रिया को केवल एक कर्म की आवश्यकता हो व किसी पूरक शब्द की आवश्यकता न हो, वह कर्म सहित पूर्ण अर्थ देती हो, तो वह पूर्ण सकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे - उसने चिट्ठी लिखी।

2. अपूर्ण सकर्मक क्रिया – ऐसी क्रिया जिसे कर्म की आवश्यकता होती है, परंतु उसका अर्थ तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि उसमें कोई पूरक शब्द न जोड़ा जाए, उसे अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - उसने उसे डाकघर भेजा।

2. अकर्मक क्रिया : वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता तथा क्रिया का प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्त्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे –
- ✓ कुत्ता भौंकता है।
- ✓ कविता हँसती है।
- ✓ टीना सोती है।

अकर्मक क्रिया

अपूर्ण अकर्मक

ऐसी क्रिया जिसमें कर्ता के विषय में पूर्ण विधान के लिए किसी संज्ञा या सर्वनाम जैसे पूरक शब्दों की आवश्यकता होती है, अपूर्ण अकर्मक कहलाती है। यहाँ वाक्य में पूरा भाव अन्य शब्दों के सहारे व्यक्त होता है।

जैसे - वह कुर्सी पर बैठा है।

पूर्ण अकर्मक

जब कोई क्रिया अपने आप में पूर्ण अर्थ देती है और उसे किसी अन्य पूरक शब्दों की आवश्यकता नहीं होती तो उसे पूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - राम हँस रहा है।

अकर्मक क्रिया से सकर्मक क्रिया का निर्माण

- ➢ भाववाचक संज्ञा के रूप में अकर्मक क्रिया का प्रयोग करके सकर्मक क्रिया बनाई जा सकती है।
  जैसे - बढ़ना से-बढ़त, देवेन्द्र की आय में काफी बढ़त हो गई है।
- ➢ कुछ अकर्मक क्रियाओं के 'ट' को 'ड़' करने पर सकर्मक क्रियाएँ बनती हैं। जैसे –

अकर्मक क्रियाएँ	**सकर्मक क्रियाएँ**
फटना	फाड़ना
छूटना	छोड़ना

- ➢ दो अक्षरों वाली अकर्मक धातु के पहले या दूसरे स्वर को तथा तीन अक्षर वाली धातु के दूसरे अथवा तीसरे स्वर को दीर्घ करने से अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है, जैसे -

अकर्मक क्रियाएँ	**सकर्मक क्रियाएँ**
पकड़ना	पकड़ाना
मिलना	मिलाना

- ➢ अकर्मक क्रिया के 'इ' को 'ए' और 'उ' को 'ओ' कर देने से सकर्मक क्रिया बनती है, जैसे –

अकर्मक क्रियाएँ	**सकर्मक क्रियाएँ**
तुलना	तोलना
खुलना	खोलना

प्रयोग तथा संरचना के आधार पर क्रिया के भेद:

- ➢ वाक्य में क्रियाओं का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है, किस रूप में किया जा रहा है आदि आधारों पर क्रिया के निम्न भेद होते हैं-

1. सामान्य क्रिया – जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ हो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।
जैसे - महेन्द्र जाता है। सन्तोष आई।

2. संयुक्त क्रिया – जो क्रिया दो या दो से अधिक भिन्नार्थक क्रियाओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।
जैसे -
- ✓ जया ने खाना बना लिया।
- ✓ हेमराज ने खाना खा लिया।
- ✓ घनश्याम रो चुका।
- ✓ वह घर पहुँच गया।

3. प्रेरणार्थक क्रिया – वे क्रियाएँ, जिन्हें कर्त्ता स्वयं न करके दूसरों को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है, उन क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं
जैसे -
- ✓ दुष्यन्त हेमन्त से पत्र लिखवाता है।
- ✓ कविता सविता से पत्र पढ़वाती है।
- ✓ अध्यापिका छात्रों से गृहकार्य करवाती है।
- ✓ शिक्षक ने छात्रों से पुस्तक पढ़वाई ।

मूल क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**	**द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया**
कटना	काटना	कटवाना
सोना	सुलाना	सुलावना
उठ	उठाना	उठवाना

उड़	उड़ाना	उड़वाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
चल	चलाना	चलवाना
करना	कराना	करवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
जागना	जगाना	जगवाना

4. **पूर्व कालिक क्रिया**: जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया, दूसरी क्रिया से पहले सम्पन्न हुई हो तो पहले सम्पन्न होने वाली क्रिया पूर्व कालिक क्रिया कहलाती है। किसी मूल धातु के साथ 'कर' या 'करके' लगाने से पूर्व कालिक क्रिया बनती है।

जैसे-

- ✓ धर्मेन्द्र पढ़कर सो गया।
- ✓ राधा ने स्नान करके भोजन किया।
- ✓ वह लेटकर खाता है।
- ✓ भीम दुर्योधन की छाती पर चढ़ बैठा।
- ✓ पंडित जी हवन करा कर कथा कह रहे हैं।

5. **नाम धातु क्रिया** – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जब क्रिया धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'नाम धातु' क्रिया कहते हैं और इन नाम धातु शब्दों में जब प्रत्यय लगाकर क्रिया का निर्माण किया जाता है तब वे शब्द 'नाम धातु क्रिया' कहलाते हैं,

जैसे –

- ✓ नरेश ने सुरेश का कमरा हथिया लिया।
- ✓ उसने मेरी पूरी संपत्ति हथिया ली ।
- ✓ राम ने किसान की ज़मीन हथिया ली।

संज्ञा	**नामधातु**	**सर्वनाम शब्द**	**नामधातु क्रिया**	**विशेषण शब्द**	**नामधातु क्रिया**	**अनुकरणवाची शब्द**	**नामधातु क्रिया**
हाथ	हथिया	अपना	अपनाना	साठ	सठियाना	थप-थप	थपथपाना
शर्म	शर्माना			तोतला	तुतलाना	थर-थर	थरथराना
बात	बतियाना			नरम	नरमाना	कँप-कँप	कँपकँपाना
लोभ	लुभाना			गरम	गरमाना		

6. **कृदन्त क्रिया** – वे क्रिया पद जो क्रिया शब्दों के साथ प्रत्यय लगने पर बनते हैं, उन्हें कृदन्त क्रिया पद कहते हैं।
   जैसे - चल से चलना, चलता, चलकर। लिख से लिखना, लिखता, लिखकर ।
7. **सजातीय क्रिया** – वे क्रियाएँ, जहाँ कर्म तथा क्रिया दोनों एक ही धातु से बनकर साथ में प्रयुक्त होते हो,सजातीय क्रियाएँ कहलाती है।
   जैसे - भारत ने लड़ाई लड़ी।
8. **सहायक क्रिया** – किसी भी वाक्य में मूल क्रिया की सहायता करने वाले पद को सहायक क्रिया कहते हैं।
   जैसे - अरविन्द पढ़ता है। भानु ने अपनी पुस्तक मेज पर रख दी है।
9. **योजक क्रिया -** एक विशेष प्रकार की क्रिया है जो वाक्य में किसी संज्ञा या विशेषण को कर्ता से जोड़ती है ।
   जैसे - चूड़ी अच्छी थी।
10. **यौगिक क्रिया** - दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है।
   जैसे - चलना से चलाना , खाना से खिलाना , पढ़ना और राह से पढ़ता रहा , जा और गिरा से जा गिरा आदि ।

काल के आधार पर क्रिया के भेद:

काल के अनुसार क्रिया तीन प्रकार की होती है :-

1. **भूतकालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा बीते समय में (भूतकाल में) कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है।
   जैसे - सरोज गयी। सलीम पुस्तक पढ़ रहा था।
2. **वर्तमान कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है। जैसे – विमला खाना बना रही है।
   जैसे - कमला गाना गाती है।
3. **भविष्यत् कालिक क्रिया** –क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हो, भविष्य कालिक क्रिया कहलाती है।
   जैसे – नीलम कल जोधपुर जायेगी। अशोक पत्र लिखेगा।

6 CHAPTER क्रिया विशेषण

- **'सीता तेज दौड़ रही थी'** वाक्य में **'तेज'** शब्द क्रियाविशेषण है, जो **'दौड़ रही थी'** क्रिया की विशेषता बतला रहा है। जो अव्यय क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें **'क्रियाविशेषण अव्यय'** कहते हैं।
- क्रियाविशेषण क्रिया के **काल, स्थान, रीति और परिमाण** बताते हैं। स्वीकारवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, अवधारणात्मक और निषेधवाचक क्रियाविशेषण भी होते हैं।

क्रिया विशेषण के प्रकार

क्रिया विशेषण शब्द मुख्यत: 4 प्रकार के होते हैं –

क्रिया विशेषण के प्रकार

कालवाचक क्रिया विशेषण

वे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने या करने के समय का बोध कराते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- कब, जब, कल, आज, प्रतिदिन, प्रायः, सांय, अभी-अभी, लगातार अब, तब, पहले, बाद में।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण

वे अव्यय शब्द जो क्रिया के घटित होने के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - ऊपर, नीचे, पास, दूर, इधर, उधर, यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, दाएँ, बाएँ, निकट, सामने, अन्दर, बाहर।

परिमाण वाचक क्रिया विशेषण

वे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने की मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं, परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे– बहुत, अति, सर्वथा, कुछ, थोड़ा, बराबर, ठीक, कम, अधिक, बढ़कर, थोड़ा-थोड़ा, उतना, जितना, खूब।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण

वे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराते हैं, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। ये क्रिया के निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार आदि भावों को प्रकट करते है।

जैसे - निःसन्देह धीरे-धीरे, सहसा, शीघ्र, तेज, मीठा, शायद, मानो, ऐसे, अचानक, स्वयं, यथाशक्ति।

Unleash the topper in you

क्रिया विशेषण	**उदाहरण**	**क्रिया विशेषण शब्द**
काल वाचक क्रियाविशेषण	वह **हमेशा** खुश रहता है। राम **शीघ्र** लौट आयेगा । मैं **कल** पुरी जाऊँगा । तुम **बार-बार** पढ़ो । उसे **लगातार** दिल का दौरा पड़ रहा है।	आज, आजकल, परसों, पहले, सर्वदा, सुबह, तुरंत, निरन्तर आदि
स्थान और दिशावाचक क्रियाविशेषण	राम **भीतर** गया है। तुम्हारे **पीछे** कौन खड़ा है ? वह मेरे **सामने** गिर पड़ी। राम **यहाँ** था ।	निकट, पास, सर्वत्र, बाहर, वहाँ, ऊपर, नीचे, इधर, उधर, दाएँ, बाएँ, आगे, किधर, उधर, आदि

रीतिवाचक क्रिया विशेषण	हाथी **धीरे-धीरे** आ रहा है। राम **झटपट** निकल पड़ा । उसे **अनायास** लाभ मिल गया। मकान **ऐसे** बनेगा । **विनयपूर्वक** बोलना चाहिए।	यों ही, तीव्र, तेज, सहज, जैसे-तैसे, चुपके-चुपके आदि
परिणाम वाचक क्रियाविशेषण	राम **बहुत** खेलता है। **जरा** शान्त रहो । **ज्यादा** हँसना अच्छा नहीं है। वह **इतना** दौड़ता है कि थक जाता है।	उतना, जितना, कितना, थोड़ा, अति, पर्याप्त, केवल, लगभग आदि

इनके अतिरिक्त कतिपय विद्वान द्वारा क्रिया विशेषण के अन्य प्रकार भी बताये गए हैं -

1. **कारण वाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के कारण को प्रकट करते हैं।
   जैसे - इस तरह, अतः, किस प्रकार।
2. **स्वीकारवाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय, शब्द, जो क्रिया की स्वीकृति को प्रकट करते हैं।
   जैसे - अवश्य, बहुत अच्छा।
3. **निषेधवाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के निषेध को प्रकट करते हैं।
   जैसे - न, नहीं, मत।

निषेधवाचक क्रिया विशेषण	न	निषेध के अर्थ में 'न' का प्रयोग होता है	➢ वह **न** आए । ➢ उससे काम **न** हुआ होगा । ➢ काम करते जाओ, चिंता **न** करना ।
	न	दो या दो से अधिक के निषेध के लिए भी 'न' का प्रयोग होता है	➢ उसने **न** खाया, **न** पिया और **न** बात ही की।
	नहीं	निषेध की निश्चितता के अर्थ में 'नहीं' का प्रयोग होता है ।	➢ इस वर्ष मैंने आम **नहीं** खाया। ➢ वह **नहीं** आया ।
	मत	आदेश के अर्थ में 'मत' का प्रयोग होता है	➢ तुम **मत** खाओ । ➢ तू इधर **मत** आ ।

4. **प्रश्न वाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के प्रश्न को प्रकट करते हैं।
   जैसे - कहाँ, कब ।
5. **निश्चयवाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के निश्चय को प्रकट करते हैं।
   जैसे - वास्तव में, मुख्यतः ।
6. **अनिश्चयवाचक क्रिया विशेषण** – वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के अनिश्चय को प्रकट करते हैं।
   जैसे - शायद, संभवतः ।

क्रिया विशेषण और सम्बन्ध बोधक में अन्तर :

- ➢ आगे, पीछे, नीचे आदि शब्द ऐसे हैं जो क्रिया विशेषण भी हैं तथा सम्बन्ध बोधक अव्यय भी।
- ➢ यदि इन शब्दों का प्रयोग क्रिया की विशेषता प्रकट करने के लिए होगा, तो वे क्रिया विशेषण कहलायेंगे, किन्तु जब वे संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताएँगे, तब इन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहेंगे।

क्रिया विशेषणों की रचना

- ➢ कुछ शब्द तो मूल रूप से ही **क्रिया विशेषण** होते हैं, किंतु कुछ क्रिया विशेषण शब्दों की रचना **प्रत्यक्ष समास** आदि के योग से भी होती है।
- ➢ रचना की दृष्टि से क्रिया विशेषण के दो भेद माने गए हैं

1. **मूल क्रिया विशेषण**
   - ✓ वे क्रिया विशेषण शब्द जो दूसरे शब्दों के मेल से निर्मित नहीं हुए हों, मूल क्रिया विशेषण कहलाते हैं।
   - ✓ जैसे - थोड़ा, अचानक, आज, कल, ठीक, शायद, पुन:, अधिक, चाहे, सदा, ऊपर, नीचे इत्यादि।
2. **यौगिक क्रिया विशेषण**
   - ✓ वे क्रिया विशेषण शब्द, जो अन्य शब्दों के मेल से जैसे – उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संज्ञा, विशेषण, परसर्ग, द्विरुक्ति, पूर्वकालिक कृदन्त, अपूर्ण कृदन्त, अनुकरणात्मक शब्दों की द्विरुक्ति आदि से निर्मित होते हैं, यौगिक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।
   - ✓ **जैसे -** चलते-चलते, एकसाथ, बेशक, प्रतिदिन, अक्षरश:, यथोचित, सम्भवत:, इत्यादि।